मॉरीशस में हिंदी-शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार में शोध की भूमिका

डॉ. माधुरी रामधारी

मॉरीशस में हिंदी का प्रचार भारतीय आप्रवासियों के आगमन के साथ आरंभ हुआ। शोध का बीजारोपण उस समय हुआ जब पूर्वज रामचरितमानस, गीता, हनुमान-चालीसा आदि धर्म-ग्रन्थों से उन विशिष्ट दोहों, चौपाइयों एवं श्लोकों की खोज करके पठन करते थे, जिनसे यंत्रणाओं को सहने की शक्ति प्राप्त हो। अंग्रेज़ी के 'रिसर्च' शब्द का हिंदी अनुवाद 'शोध' है। 'रिसर्च' का तात्पर्य है - जो पहले से खोजा जा चुका है, उसकी पुन: खोज करना अथवा विषय की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए बार-बार खोज करना। मॉरीशस के 'बैठकाओं' में जब बच्चों को हिंदी पढ़ाने का समय आया तब स्वर, व्यंजन, मात्रा तथा संयुक्ताक्षर का बोध कराने के पश्चात उपलब्ध धर्म-ग्रन्थों में पुन: खोज की गई और उन सरल शब्द-समूहों को उद्धृत करके बच्चों को पढ़ाया गया, जिन्हें वे सहजता पूर्वक कंठस्थ कर सकें और जिनके नित्य पठन से वे शब्दार्थ ग्रहण कर सकें -

"उस समय के विद्यार्थी अक्षर-बोध हो जाने के बाद रामलीला, हनुमान-चालीसा और बाद में रामायण और आल्हा-ऊदल का सस्वर पाठ करने लग जाते थे। इस प्रकार इन हस्तलिखित ग्रंथों के नित्य पठन-पाठन से उन्हें शब्दों का अर्थ और पंक्तियों का आशय बहुत संघर्ष के बाद पता चलता था।" (1)

यद्यपि के. हज़ारीसिंह की मान्यता है कि प्रारंभिक चरण में बैठकाओं में हिंदी-शिक्षण की अपेक्षा धर्म की शिक्षा अधिक होती थी (2) और अपने ऐतिहासिक दस्तावेज़ 'मेरी हिंदी यात्रा' में सोमदत्त बखोरी ने लिखा है –

"शाम को मोंताई लोंग के शिवालय में पढ़ने जाता था। वहाँ पर पंडित दीक्षित पढ़ाते थे। इनकी पढ़ाई से अधिक मुझे इनकी पूजा की याद है।" (3)

तथापि यह निर्विवाद है कि बैठकाओं की उर्वर भूमि में हिंदी-शिक्षण का बीज रोपा गया और इसी के साथ शोध का भी बीजारोपण हुआ। भारत से पुस्तिकाएँ मंगवाकर शिक्षण-कार्य का विस्तार किया गया। सन् 1922 में, पंडित अनिरुद्ध शर्मा ने पोर्ट-लुई बाज़ार में एक कोना लेकर 'सरस्वती पुस्तकालय' (वर्तमान 'हरी बुक शॉप') की स्थापना की। मॉरीशस के इस प्रथम हिंदी पुस्तकालय में भले ही प्रारंभ में धर्म, दर्शन, संस्कृति और ज्योतिष-विद्या संबंधी पुस्तकें बिकने लगीं, किन्तु कालान्तर में, स्वयं पंडित अनिरुद्ध शर्मा भारत से मोतीलाल बनारसीदास के 'डायमंड पॉकेट बुक', मुंशी प्रेमचन्द के 'गोदान' और 'कर्मभूमि' तथा हिंदी की सरल बाल-पुस्तकें लाकर 'सरस्वती पुस्तकालय' में उपलब्ध कराने लगे। फलस्वरूप, हिंदी साहित्य के प्रति पाठकों की रुचि बढ़ी, साहित्य-शिक्षण हेतु उपयुक्त सामग्री प्राप्त हुई, साहित्यिक रचनाओं में शोध करने की वृत्ति जागृत हुई और हिंदी-शिक्षण को नया आयाम मिला।

द्वितीय विश्वयुद्ध में बाल-पुस्तकों का अभाव पड़ा और शिक्षकों ने पुन: शोध के आधार पर हिंदी की शब्द-संपदा एवं संरचनात्मक व्यवस्था से शब्दावलियों तथा वाक्य -संरचनाओं की खोज करके नवीन पाठ्य-सामग्री तैयार करने का प्रयास किया। डेविड हॉपकिन्स ने शिक्षक को 'शोधकर्ता' माना है - *"A teacher is a researcher"* (4)

सन् 1935 में, हिंदी प्रचारिणी सभा में हिंदी शिक्षक के रूप में कार्यरत सोमदत्त बखोरी ने सभा की मांग पर बनवारीलाल पचौरी रचित 'हिंदी भाषा व्याकरण' तथा शूरेश्वर पाठक विद्यालंकार लिखित 'व्याकरण मयंक' आदि पुस्तकों में शोध-कार्य करके 'हिंदी की पहली पुस्तक तैयार की। सन् 1947 में उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद के हिंदी विश्वविद्यालय से संचालित 'परिचय' परीक्षा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की अधिगम-सुविधा के लिए भारत से मंगाई गईं 'हिंदी गद्य की प्रवृत्तियाँ', 'हिंदी के गौरव ग्रन्थ' और 'हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' के आधार पर अनुसंधान करके 'हिंदी साहित्य की एक झांकी' लिखी, जिसे 'परिचय' के पाठ्यक्रम में निहित किया गया। सन् 1978 में इस पुस्तक का नया संस्करण तैयार करने पर सोमदत्त बखोरी ने लिखा -

"ढेर सारी पुस्तकों में देखना पड़ा और 'झांकी' के ढाँचे को बदलना पड़ा। फलस्वरूप एक नयी पुस्तक लिख डाली जिसका शीर्षक 'हिंदी साहित्य का परिचय' रखा।" (5)

मॉरीशस में अगर हिंदी पठन-पाठन के साथ शोध का बीज लगा तो पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की प्रक्रिया के साथ इस बीज में अंकुर फूटा। इस तथ्य का पुष्टिकरण सन् 1954 में हुआ जब प्राथमिक पाठशालाओं में पूर्णकालिक हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति के पश्चात हिंदी-शिक्षण कार्य सुनियोजित रूप से चलने लगा और प्रो. रामप्रकाश का ध्यान उस समय प्रयुक्त पाठ्य-पुस्तक 'भारत की राष्ट्रभाषा पुस्तक-माला' भाग एक से छ: की अपेक्षा मॉरीशसीय परिवेश का दिग्दर्शन कराने वाली पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की ओर केंद्रित हुआ। वरिष्ठ अध्यापकों के सहयोग से शोधकार्य किया गया और सन् 1957 में 'नवीन हिंदी पाठमाला' पहली से छठी तक की पुस्तकों का निर्माण किया गया। इस संदर्भ में प्रहलाद रामशरण कहते हैं -

"इनमें मॉरीशस के इतिहास, भूगोल तथा सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी दी गई और नवीन शिक्षण-विधि अर्थात तोता-रटन से अक्षर ज्ञान न कराकर 'सप्तपदी' द्वारा शब्दों के माध्यम से अक्षर-ज्ञान कराने की परिपाटी चली।" (6)

प्राथमिक स्तर पर जब भी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में नवीन बिन्दुओं का समावेश किया गया तब नए सिरे से खोज की गई और नवीन सामग्री प्रस्तुत करने वाली नई पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। यह श्रृंखला माध्यमिक स्तर पर हिंदी-शिक्षण में जारी रही। इसी श्रृंखला की एक कड़ी सन् 1978 में डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि द्वारा संपादित 'पद्य-पराग' पुस्तक का प्रकाशन है। भारत तथा मॉरीशस की प्रतिनिधि साहित्यिक रचनाओं के विशिष्ट अंगों की खोज करके डॉ. चिन्तामणि ने 'पद्य-पराग' का निर्माण किया (7), जो आज भी माध्यमिक स्तर पर हिंदी-साहित्य की शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग बना हुआ है।

निम्न माध्यमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण हेतु हिंदी भाषिक-व्यवस्था की खोज से लेकर पंचतत्र की कहानियों और विज्ञान के आधुनिकतम साधनों की भी खोज की गई, ताकि हिंदी-ज्ञान प्रदान करने के साथ युवा-छात्रों के चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सके तथा उन्हें नवीन प्रौद्योगिकी का बोध भी कराया जा सके। नित्य शोध के आधार पर पूरक पुस्तक माला का निर्माण व प्रकाशन निरन्तर होता रहा। इस दिशा में महात्मा गांधी संस्थान विशेष रूप से प्रयत्नशील रहा। सन् 1993 से 1996 तक क्रमश: फ़ॉर्म एक से फ़ॉर्म चार और सन् 2012 तथा 2014 में पुन: फ़ॉर्म चार तथा फ़ॉर्म पाँच की पाठ्य -पुस्तकों का प्रकाशन इसका ज्वलन्त प्रमाण है। पाठ्य-पुस्तक निर्माता प्राय: हिंदी प्राध्यापक एवं हिंदी शिक्षक ही रहे हैं। अगर हिंदी-शिक्षकों में शोध-वृत्ति प्रबल न होती और वे शिक्षण-सामग्री तथा शिक्षण-विधि में नवीनता व निखार लाने में कटिबद्ध नहीं होते तो न प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर हिंदी-शिक्षण का विकास होता और ना ही हिंदी मॉरीशस के विश्वविद्यालय तक पहुँचती।

तृतीयक शिक्षा में, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर छात्र व्यवस्थित रूप से शोध-कार्य संपन्न करके लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत करते हैं। महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी में डिप्लोमा करने वाले विद्यार्थी निर्धारित नियम के अनुसार कोर्स के तृतीय वर्ष में हिंदी भाषा अथवा साहित्य पर गुणात्मक शोध करके 5000 से 6000 शब्दों का लघु शोध-प्रबंध लिखते हैं। मॉरीशस के विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से हिंदी में बी.ए. (ऑनर्ज़) करने वाले छात्र 8000 से 12000 शब्दों का और एम.ए. (हिंदी) के विद्यार्थी 12000 से 15000 शब्दों का शोध-प्रबंध लिखते हैं। महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से मॉरीशस शिक्षा संस्थान (MIE) में पी.जी.सी.ई. (हिंदी) के लिए पंजीकृत विद्यार्थी कोर्स के द्वितीय वर्ष में हिंदी-शिक्षण पर क्रियात्मक अनुसंधान करके 7000 से 10000 शब्दों का लघु शोध प्रबंध लिखते हैं। डिप्लोमा, बी.ए., एम.ए. और पी.जी.सी.ई. के स्तर पर लिखित शोध-प्रबंधों का प्रकाशन नहीं होता, परन्तु इनकी प्रतियाँ मॉरीशस के विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी संस्थान और मॉरीशस शिक्षा संस्थान के पुस्तकालयों में संदर्भ के लिए शोधार्थियों को उपलब्ध कराई जाती हैं। सन् 2010 में मॉरीशस के विश्वविद्यालय में आमंत्रित विदेशी परीक्षक की रिपोर्ट के अनुसार -

"भारत के विश्वविद्यालयों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर शोध-प्रबंध लेखन का प्रचलन नहीं हैं। अनुशंसनीय है कि मॉरीशस की उच्च शिक्षा में शोध और उसकी गुणवत्ता को महत्व दिया जाता है।" (8)

यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस सन् 1995 से विद्यार्थियों को एम.फ़िल. / पी.एच.डी. करने का अवसर प्रदान कर रहा है। अब तक निम्न चार विद्यार्थियों ने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है, जिनमें दो के शोध-प्रबंध पुस्तकाकार में प्रकाशित हैं –

१. डॉ. हेमराज सुन्दर – स्वातंत्र्योत्तर मॉरीशस में हिंदी काव्य की उपलब्धियाँ : एक विश्लेषण, 1998

२. डॉ. राजरानी गोबिन – स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में नोस्टेल्जिया-भावना, 1999 (प्रकाशित)

३. डॉ विनोदबाला अरूण – वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस में नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन एवं मॉरीशस के हिन्दू समाज पर उनका प्रभाव, 2000 (प्रकाशित)

४. डॉ माधुरी रामधारी – मॉरीशसीय हिंदी नाट्य-साहित्य में असुरक्षा-भाव, 2012

प्रश्न यह उठता है कि सन् 1994 से 2012 तक अर्थात अठारह वर्षों की दीर्घ कालावधि में मात्र चार विद्यार्थी ही क्यों पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर पाए ? इसके उत्तर में वर्तमान प्रतिकुलाधिपति व परिषद अध्यक्ष प्रो. सुदर्शन जगेसर का कथन है –

"शोध के स्तर और उसके नतीजे से ही किसी विश्वविद्यालय की पहचान होती है। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस अपना स्तर और अपनी पहचान बनाए रखना चाहता है। इसीलिए बहुत ही नाप-तौल कर पी.एच.डी. की उपाधि देता है।" (9)

सन् 2000 से 2004 तक मॉरीशस विश्वविद्यालय में एम.फ़िल. / पी.एच.डी. के लिए पंजीकृत छात्रों के निर्देशकों की मान्यता है कि शोधार्थी शोध को प्राथमिकता न देने के कारण एकाग्रता एवं दृढ़ता द्वारा शोध-कार्य को विधिवत आगे नहीं बढ़ा पाते हैं। कुछ छात्र निर्धारित कालावधि में शोध-प्रबंध जमा न करने पर यूनिवर्सिटी के नियमानुसार 'टरमिनेट' कर दिए जाते हैं और अन्य शोधार्थी बारम्बार 'एक्सटेनशन' की मांग करते हुए, शोध-प्रबंध के लेखन-कार्य को लम्बे समय तक खींचते हैं। शोध-वृत्ति तथा शोध के प्रति समर्पण-भाव को विकसित करने से ही पी.एच.डी. के विद्यार्थियों को वांछित सफलता प्राप्त हो सकती है।

पिछले आठ वर्षों में (2006-2014) यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस में पी.एच.डी. के लिए पंजीकृत होने वाले छात्रों की संख्या नगण्य है। इसके अनेक कारण हैं – छात्रों की शोध-योजना को पारित करने की धीमी प्रक्रिया, शोध-काल और शोध-प्रबंध के मूल्यांकन-काल की दीर्घता तथा एम०फ़िल०/पी०एच०डी० कोर्स का भारी शुल्क। शोध-प्रबंध को जमा करने में कम से कम पाँच साल तथा उसका मूल्यांकन करने में दो साल लग जाते हैं। कुल मिलाकर सात साल बाद ही शोधार्थी पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर पाता है। एम.फ़िल. / पी.एच.डी. के स्तर पर हिंदी में शोध को बढ़ावा देने के लिए कोर्स-काल तथा मूल्यांकन-प्रक्रिया-काल को घटाने की आवश्यकता है। 'टरच्येरी एडुकेशन कमीशन' एवं 'मॉरीशस रिसर्च काउंसिल' द्वारा अधिक शोधार्थियों को छात्रवृत्ति की उपलब्धि कराई जाने पर निश्चय ही तृतीयक शिक्षा के उच्चतम स्तर पर हिंदी में शोध को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

सन् 1973 से 2014 के बीच भारत के दिल्ली, आग्रा, बनारस, उज्जैन आदि विश्वविद्यालयों से सोलह विद्यार्थियों ने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इनमें चार शोधार्थियों के शोध-प्रबंध प्रकाशित हैं -

1. डॉ. रामेश्वर ओरी – मॉरीशस का भोजपुरी लोक-गीत, 1973

2. डॉ. मोहनलाल हरदयाल – मॉरीशस में हिंदी और उसका साहित्य, 1980
3. डॉ. बीरसेन जागासिंह – हिंदी को मॉरीशस का योगदान, 1983
4. डॉ. उदय नारायण गंगू – मॉरीशस का भोजपुरी लोक-साहित्य एवं भारतीय संस्कृति, 1991 (प्रकाशित)
5. डॉ. अलका धनपत – छायावादोत्तर हिंदी काव्य में पौराणिक कथाएँ तथा आधुनिक मानसिकता, 1992
6. डॉ. संयुक्ता भोवन – अन्त: संघर्ष का यथार्थ एवं निराला की काव्य-सर्जना, 1997 (प्रकाशित)
7. डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि – मॉरीशस के फ़ॉर्म-एक से फ़ॉर्म-पाँच की पाठ्य-पुस्तकों के आधार पर हिंदी-शिक्षण, 1997
8. डॉ. ठाकुरदत्त पाण्डे – भाषा-विज्ञान विषयक शोध-कार्य, 1997
9. डॉ. देवरत्न सिरतन – अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में हिंदीत्तर भाषिक प्रयोग, 1999
10. डॉ. रेशमी रामधनी – समकालीन हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में अभिव्यक्त बहुआयामी विद्रोह, 2001(प्रकाशित)
11. डॉ. सुरीती रघुनन्दन – विरेन्द्र मिश्र के काव्य में युगीन संदर्भ, 2001
12. डॉ. कृष्ण कुमार झा – मॉरिशस का हिंदी कथा-साहित्य - एक सांस्कृतिक अध्ययन, 2004 (प्रकाशित)
13. डॉ. लालदेव अन्चराज – भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा मॉरीशस के राष्ट्रकवि डॉ. ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन, 2004
14. डॉ. जयचन्द लालबिहारी – मॉरीशस के माध्यमिक स्कूल के बच्चों का त्रुटि-विश्लेषण, 2004
15. डॉ. तनुजा पदारथ – कृष्णा सोबती के अंग्रेज़ी में अनूदित हिंदी उपन्यासों का अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में मूल्यांकन, 2011
16. डॉ. लक्ष्मी झमन – मॉरीशसीय हिंदी लेखन में स्त्री-विमर्श, 2013

मॉरीशस का 'टरच्येरी एजुकेशन कमीशन' (TEC) शोध-प्रबंध के प्रकाशन हेतु 'बुक ग्रांट' के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान करता है , परंतु हिंदी का बिरला ही कोई शोधार्थी इससे लाभान्वित हो पाता है। इस 'ग्रान्ट स्कीम' में विस्तार लाने की आवश्यकता है।

मॉरीशस में पिछले चार सालों से 'ओपन यूनिवर्सिटी' हिंदी में पी.एच.डी. करने की नई सुविधाएँ प्रदान कर रही है। इस समय पाँच विद्यार्थी ओपन यूनिवर्सिटी से हिंदी में शोध कर रहे हैं। उनका झुकाव अधिकांशत: मॉरीशस के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़े विषयों पर शोध करने की ओर है -

1. मोहाबीर शान्ति – आर्य-समाज के हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का मॉरीशस के विकास में योगदान
2. उदोय राजेश कुमार – डॉ. बीरसेन जगासिंह की रचनाओं में विद्रोह - एक समीक्षात्मक अध्ययन
3. भोगीरथ वर्षा – मॉरीशसीय कवि डॉ. हेमराज सुन्दर की साहित्यिक रचनाओं में विद्रोह के तत्व
4. शशि दुखन – मॉरीशस के हिंदी निबन्धों का एक सांस्कृतिक अध्ययन
5. गिरजानन्दसिंह बिसेसर – मॉरीशस की सामाजिक लोककथाओं का सामाजिक और नृवैज्ञानिक अध्ययन

मॉरीशस का विपुल हिंदी साहित्य शोधकर्ताओं में रुचि जागृत करने में सक्षम है। ओपन यूनिवर्सिटी में शोध-प्रक्रिया के व्यवस्थित रूप से शोधार्थी संतुष्ट है, परंतु वहाँ भी कोर्स-फ़ी एक जटिल मुद्दा है।

शोध के नए क्षितिजों की तलाश जारी है। इसका प्रमाण मॉरीशस में हिंदी में 'पोस्ट-डॉक्टोरल' शोध-कार्य है। एक शोधार्थी, आग्रा के डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय से डी.लिट. कर चुका है –

1. डॉ. हेमराज सुन्दर – मॉरीशस के हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास, डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आग्रा, 2009

अन्य शोधकर्ता भी 'पोस्ट-डॉक्टोरल' अनुसंधान की ओर बढ़ रहे हैं। इस दिशा में UGC-TEC consortium agreement के तहत अनुसंधानकर्ताओं को भारत के विश्वविद्यालयों में शोध करने की वित्तीय सुविधाएँ भी प्रदान की जाती हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस में भी हिंदी में 'पोस्ट-डॉक्टोरल' शोध का प्रावधान किया गया है, परंतु आज तक इस दिशा में किसी शोधार्थी ने कदम नहीं उठाया है। इसका अहम कारण यह है कि मॉरीशस का 'नेशनल क्वालिफ़िकेशन्स फ़्रेमवर्क' (NQF) दसवें स्तर तक अर्थात पी.एच.डी. के स्तर तक रुका हुआ है। पोस्ट-डॉक्टोरल शैक्षिक प्रमाण की दृष्टि से 'राष्ट्रीय क्वालिफ़िकेशन्स फ़्रेमवर्क' में परिवर्द्धन करने की आवश्यकता है।

मॉरीशस में हिंदी में शोध-कार्य विभिन्न स्तरों में हो रहा है। फ़िर भी शोध के क्षेत्र में कमियाँ हैं। शोधार्थियों एवं संस्थाओं का सम्मिलित शोध-कार्य (collaborative research) नहीं के बराबर है। अनुसंधानकर्ताओं तथा देश-विदेश की संस्थाओं के बीच सम्मिलित शोध (inter-institutional research) द्वारा हिंदी में शोध का विस्तार करना शेष है।

संदर्भ :

1. के. हज़ारीसिंह, मॉरीशस में भारतीयों का इतिहास, पृ. 65, 1914, मॉरीशस स्टेशनरी एंड प्रिंटिंग एस्टेब्लिशमेंट
2. पंडित रविशंकर कोलेशर, वसन्त अंक 42, पृ. 11, 1987, महात्मा गांधी संस्थान, मोका

3. सोमदत्त बखोरी, वसंत अंक 42, पृ. 12, 1987, महात्मा गांधी संस्थान, मोका
4. David Hopkins, 'A teacher's guide to classroom research', pg 2, 1985, 0pen University Press, Buckingham, Philadelphia
5. सोमदत्त बखोरी, वसंत अंक 31, पृ. 16, Dec 1985, महात्मा गांधी संस्थान, मोका
6. प्रह्लाद रामशरण, 'एक मॉरीशसीय साहित्यकार की आस्था', पृ. 50, 1997, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
7. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि, हिंदी पद्य-पराग, दो शब्द, 1978
8. Examiner's Report, pg 2, 2010, University of Mauritius, Réduit, Mauritius
9. प्रो. सुदर्शन जगेसर, सी.एस.के., जी.ओ.एस.के., साक्षात्कार, सितंबर, 2014

अध्यक्षा, सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग,
महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस
madhuri.ramdharee@yahoo.com